# ज़िंदगी की धूप-छाँव

तेरे इश्क में ....

अनुज

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Anuj 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-261-0

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: November 2025

# ~* दो शब्द *~

समर्पित उन सभी व्यक्तियों को जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया

समर्पित उन सभी मित्रों को जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया

समर्पित सभी प्रेम में डूबे प्रेमियों को जिनके प्रेम ने उन्हें एक नया व्यक्तित्व दिया

समर्पित उन सभी प्रशंसकों को जिन्होंने मेरी रचनाओं पर तालियां बजायीं और मुझे सम्मान दिया

समर्पित माता-पिता, भाई-बंधुओं को जिन्होंने आशीर्वाद और मार्ग दर्शन दिया

समर्पित

"जिंदगी की धुप-छाँव"

प्रेम में रसित कविताओं और ग़ज़लों की एक रचना संग्रह

# अनुक्रमणिका

~* अपनी कलम से *~ .................................................. 1
~* एक ख़याल *~.......................................................3
~* एक अफ़साना *~..................................................5
~* वादे तो निभाया करो *~..........................................7
~* ये बातें *~ .............................................................9
~* मुहब्बत का पैमाना *~............................................11
~* मिलो तो सही *~ ..................................................13
~* तेरी आँखें *~.........................................................15
~* तुम ही तो हो *~ ...................................................17
~* वही बात हूँ मैं *~ .................................................19
~* मन की पाती *~....................................................20
~* संवर जाएँगे *~ .....................................................22
~* तेरा चेहरा *~ .......................................................24
~* ऐ ज़िंदगी *~ .........................................................26
~* पहली दफ़ा *~ .....................................................28
~* उम्र भर *~.............................................................30
~* मेरा ख़्वाब *~ ......................................................31
~* भर नज़र *~...........................................................33
~* तूँ मेरी क्या लगती है *~.......................................34

~* मुकम्मल इश्क़ *~ .................................................... 36
~* तेरी तस्वीर *~......................................................... 38
~* काफ़ी है *~............................................................ 40
~* कुछ लब्ज *~ ......................................................... 42
~* जाओगे कहाँ *~...................................................... 44
~* तेरा दीदार *~......................................................... 46
~* उसकी आदत *~ ...................................................... 48
~* समझ लेना के मैं हूँ *~............................................... 50
~* इतनी सी बात *~...................................................... 52
~* आइनों में क्या देखूँ *~ ............................................... 54
~* मिले हो अभी *~...................................................... 56
~* तुम हो कहाँ *~ ....................................................... 58
~* अल्फ़ाज़ *~ ........................................................... 60
~* एक उम्मीद *~ ........................................................ 62
~* तेरा एहसास *~ ....................................................... 64
~* उसका ख़याल *~ ..................................................... 66
~* फिर से इश्क़ *~....................................................... 68
~* मेरी आरज़ू *~......................................................... 70
~* गम-ए-दिल *~......................................................... 72
~* दिल टूटता क्यूँ है *~.................................................. 74
~* अश्कों का क़ाफ़िला *~............................................... 76
~* हसीं और भी हैं *~ ................................................... 78

~* कुछ दर्द मेरा *~........................................................80
~* हम दूर सही *~.........................................................82
~* अधूरा फ़साना *~.......................................................85
~* मंज़र है आदमी *~ ....................................................87
~* खुदरंग ज़िंदगी *~.....................................................89
~* फ़र्ज़ का आदमी *~ ...................................................91
~* यारों की महफ़िल *~..................................................94
~* सवाल बाक़ी है *~ ....................................................96
~* सेवानिवृत्त पिता *~ ..................................................98

# ~* अपनी कलम से *~

कुछ किताबें, कुछ पन्ने और बातें सनम से
मैं भी लिखूँगा दास्ताँ, अपनी कलम से

वादे भी होंगे, बातें भी होंगी
रूबरू उनसे मुलाक़ातें भी होंगी
ताबीर होंगे उस ख़ुदा के करम से

कुछ किताबें, कुछ पन्ने और बातें सनम से
मैं भी लिखूँगा दास्ताँ, अपनी कलम से

वो हँसना हँसाना वो बातें बनाना
रूठ के खुद ही, फिर उसको मनाना
जागना ऊँघ कर अधखुली आँखों से
कुछ अनकही, टूटे लब्ज़ों में बताना
कुछ पल का इंतज़ार होगा क़सम से

कुछ किताबें, कुछ पन्ने और बातें सनम से
मैं भी लिखूँगा दास्ताँ, अपनी कलम से

तराने भी होंगे, फसाने भी होंगे
कुछ यूँ ही! गुदगुदाने के बहाने भी होंगे
इशारों की फ़रमाइश, क़िस्से किश्तों में सुनाना
मुक़द्दर के फ़लक पे, बेतरतीबी गाने भी होंगे
जुड़ जाएँगे डोर, मक़बूल खुदाई की रसम से

कुछ किताबें, कुछ पन्ने और बातें सनम से
मैं भी लिखूँगा दास्ताँ, अपनी कलम से

# ~* एक ख़याल *~

एक ख़याल है शायद तेरा, जो मेरे सुकूँ से लड़ता है
पाने की धुन में तुझको, अब दिल खुदी पे अड़ता है
बेबाक़ इशारों पे अब, बेसाज़ तराने हैं शायद
कुछ और फ़साने होने को, यूँ ही ईत्र सा महेकता है
एक ख़याल है शायद तेरा, जो मेरे सुकूँ से लड़ता है

सुन के तेरी मीठी तान, बेसुध अंजाना हो गया
पल पल ठहरता हो जैसे, मदहोश फ़साना हो गया
यूँ तो मैं कर लेता हुँ बातें, हवाओं से भी साक़ी
फ़िज़ाओं में भी गुफ़्तगू है, के मैं तो दीवाना हो गया

एक घड़ी जो गुज़र जाए यूँ, अब तो चार पहर सा है
एक ख़याल है शायद तेरा, जो मेरे सुकूँ से लड़ता है

कोई जुनूँ परवान चढ़ जाये, किसी ख़ामोश गलियारे में
आता नहीं नज़र और कोई, चमकते उजियारे में
मंज़र बदल गया है कहीं, फिरदौस बना हो जैसे
उजली किरन सी है फैली, काले अँधियारे में

यूँ तो जुगनू भी शैतानी में, चटकती शमा से झगड़ता है
हाँ! ये ख़याल ही तो है तेरा, जो मेरे सुकूँ से लड़ता है

# ~* एक अफ़साना *~

मुस्कुराती हो, टकराती हो
क्या मुलाकात का बहाना है

फ़साने बाज़ार में ढूँढ रही हो
मेरा इश्क़ ख़ुद एक अफ़साना है

तेरे शहर में आया है ये मुलाजिम तेरा
सुना है परिंदों के झुरमुट में दुकान है

खुशियों का पुलिंदा बेंचती हो क्या
या मुझसे यूँ ही मिलने का अरमान है

मुहब्बत के समान का एक व्यापारी हूँ
हो सके तो थोड़ा सुकून ही ख़रीद लो

एक दफ़ा मुस्कुरा के हाँ कह दो
चाहो तो बन जाऊँ आपका मुरीद लो

अरे! साहिब, तकल्लुफ़ क्यों है
इस आशिक़ी से ही तो ज़माना है

कहो तो हथेलियों में चाँद ही रख दूँ
कमबख़्त मेरा इश्क़ ही तो आज़माना है

# ~* वादे तो निभाया करो *~

ख्वाबों में यूँ ही ना आया करो
हाँ सच में यूँ ना सताया करो
गर मिलना ही है तुमको ऐ साक़ी
फिर वादे तो कर के निभाया करो

चलो माना की हैं मजबूरियाँ भी सनम
पर तुमने ही तो ली थी सारी क़सम
कुछ दूर चल के तो मैं आ गया हूँ
राबता में कदम तुम भी उठाया करो

कशिश है तपिश है तरन्नुम भी तो है
हाँ मिलने की तुमसे एक धुन भी तो है
होश खो चला है एक तूफ़ाँ की तरह
कश्मकश में फिर वक्त ना जाया करो

मिलो और मिल के ना जाओ कभी
हो तुम बस मेरे ही समझाओ कभी
एक दूजे में खो जाए ऐसा हो पहर
ठहरे ना कभी समां बाँध जाया करो

दुआ बद्दुआ क्या अब लगेगी मुझे
एक तेरे सिवा कोई नज़र ना सुझे
ज़हर हो असर हो क्या हो क्या पता
इश्क़ खुदा है, कुछ ख़ौफ़ खाया करो

अभी उम्र है यूँ ही भटकने दो जरा
धुन है तुम्हारी कुछ मटकने दो जरा
भुला दें ख़ुद को या याद रहे ना कुछ
मान लिया है अपना तो समझाया करो

कहीं आ जाओ बस दुआ की तरह
गुदगुदा जाओ भीनी हवा की तरह
हाँ हँसीं तुम ख्वाबों में ही नहीं ज़रीन
बन के नशा सुबह भी छा जाया करो

दिए ख़्वाब तुमने फ़िराक़ भी तुम हो
नज़र ढूँढती है ज़वाब भी तुम हो
हर ओर तुम हो या मंज़र हो शायद
सपनों का अपना शहर भी बसाया करो

हाँ सच में यूँ ना सताया करो
वादे जब किया है तो निभाया करो

# ~* ये बातें *~

कुछ वो हमसे कहती है
कुछ हम मुसकाया करते है
कुछ वो यूँ इतराती है
कुछ हम बहलाया करते है

ये बातें बस यूँ होनी हैं
कुछ यादें अब यूँ होनी हैं
जैसे नदियाँ के धार मिले
जैसे साजों से साज़ मिले

हम यूँ ही बातों बातों में
एक रिश्ता साझा करते हैं
रहना एक धागे में गुंथ कर
कुछ ऐसा वादा करते हैं

हम कहते हैं उसको अपना
वो मन हीं मन इठलाती है
कुछ उलझे उलझे बालों में
ख़ुद को जैसे सुलझाती है

दिल ही दिल की बातों में
हम यूँ रम जाया करते हैं
कुछ वो इतराया करती है
कुछ हम बहलाया करते है

# ~* मुहब्बत का पैमाना *~

मुहब्बत सच्ची है इसका पैमाना कहाँ होता है
तुम हो, मैं हूँ, दरम्यां फिर ज़माना कहाँ होता है
ज़िसकी तस्वीर एक दफ़ा दिल में बस गई
हो रब को मंज़ूर कुछ भी, उसे भुलाना कहाँ होता है

नादिया के दो तीर कहीं मिलें ना मिलें
कश्ती साहिल से जाके मिलें ना मिलें
लहरों की तो फ़ितरत है बहते जाना
पानी का तो मुकद्दर है घुल जाना

दो दिल गर मिल जाएँ एक रंग में अगर
ये फ़साना फिर लब्ज़ों में बताना कहाँ होता है

एहसास ही तो है, जो जुड़ जातें है शायद
वो इश्क़ ही क्या जो ना बदल दे रवायत
जब किसी की आँखों में ख़ामियाँ भी चमचमाने लगें
बदहवासी एक जुनून सी नज़र आने लगे

ये मंज़र है पागलपन का हर दीवाना जहाँ होता है
वरना यूँ ही किसी बात पे मुस्कुराना कहाँ होता है

जब दो रूह बन बैठी हों एक दूजे की मुरीद
जुल्मों के कसीदों में भी उसे भुलाना कहाँ होता है
मुहब्बत सच्ची है इसका पैमाना कहाँ होता है
तुम हो, मैं हूँ, दरम्यां फिर ज़माना कहाँ होता है

# ~* मिलो तो सही *~

तुम मिलो तो सही
होंगी वो बातें झिलमिल सी रातें
बरसती वो हल्की भीनी बरसातें
जो चाहोगी बस होगा वही
तुम मिलो तो सही

बैठेंगे दरिया पे बांहे पसारे
फिर रेत में पैरों से चद्दर बनाना
या चलना बस यूँ ही नदिया किनारे
बतियाते दो साथी खो जाएँ कहीं
तुम मिलो तो सही

तब होगी हर एक फ़िक्र बस नदारत
कुछ होगी तुम्हारी ऐसी इबादत
जैसे उतारा हो तुमको इन्ही बादलों से
जैसे करते हैं बस अब उनकी इनायत
ख्वाहिश है तरन्नुम में अब तो यही
तुम मिलो तो सही

सूखे हैं नैना तुम्हारे दरश को
आ जाओ अब तो यु न कसक दो
कबसे टिकाये लगाये टकटकी
भेजो संदेसा या कुछ तो खबर दो
कहना है तुमसे सब अनकही

तुम मिलो तो सही
हाँ अब मिलो तो सही

# ~* तेरी ऑंखें *~

नील समुन्दर तेरी आँखें
जैसे दरिया का पानी
डूबा जो भी हुआ वो आशिक़
भुला अपनी रवानी

एक छटाँक जो मुसकाए तूँ
पल भर में दिल छू जाए तूँ
तेरे गालों में मोती से
ख़ुशियाँ छुपती बतलाए तूँ

काले बालों के आग़ोश में
जैसे हो कोई काला जादू
खो जाए मन देख देख के
जान तू ले ले और मैं क्या दूँ

और तेरी ये काया जो है
प्यार भरी एक माया सी है
कैसे कोई रोके खुद को
तूँ प्रेम रसित एक साया सी है

इश्क़ भरे जो सबके दिल में
मुहब्बत हो जिसमें बर्फ़ानी
नील समुन्दर तेरी आँखें
जैसे दरिया का पानी

डूबा जो भी हुआ वो आशिक़
भुला अपनी रवानी

# ~* तुम ही तो हो *~

एक तुम ही तो हो
हाँ तुम ही तो हो

एक तुम ही तो हो जिसकी मीठी बतियाँ
सोनी सी मुस्कान माथे की बिंदिया
दे दे गुमान हमें हमारी तक़दीर पर
भुला सारे ग़म मिली ख़ुशियों की सौगतियाँ
हाँ! एक तुम ही तो हो

एक तुम ही तो हो जिसके गाहे बगाहे
तकती रहे पल पल हमारी निगाहें
मोती सी आँखें परियों सी पलकें
जैसे हमारे लिए ही खुलीं हैं वो बाँहें
हाँ! एक तुम ही तो हो

एक तुम ही तो हो दिल की ख़्वाहिश
करें हम ख़ुद से ही ख़ुद की नुमाइश
अंजाम से हैं अंज़ाँ क्यूँ ये खला है
मुहब्बत में बिखरने की है आजमाइश
हाँ! वो तुम ही तो हो

एक तुम ही तो हो जिसके आग़ोश में
भूले हम सब कुछ यूँ ही होश में
ठंढी बयार हो या हो कोई झोंका
या फैली चमक हो कोई ओश में
हाँ! एक तुम ही तो हो

एक तुम ही तो हो जीने का सहारा
एक तुम ही तो हो ये सारा नज़ारा
हाँ! बस तुम ही तो हो

# ~* वही बात हूँ मैं *~

तेरी मेरी छोटी छोटी बातों में एक फ़साना सा है
उस प्यारे फ़साने में निकली जो हाँ वही बात हूँ मैं
खो जायें तरन्नुम में सितारे कहीं तराना तो होगा
रह जाएगा जो साथ हर पल हाँ वही सौग़ात हूँ मैं

बने कोई तकरार अगर दरार हमारे दरमियाँ
हर पल हूँगा मैं खड़ा एक जोड़ एक साँस हूँ मैं
हो जैसे कोई हवा का झोंका ऐसा मनचला
एक साया सा है हर पल वही एहसास हूँ मैं

अंधेरे रास्तों में रोशनी के जलते दिए की तरह
फैली बेसुधी में परवाने सा बदहवास हूँ मैं
चाहें हो कितनी भी मगरूर राहें ऐ रहेगुज़र
रूह की तरह हर पल तुझमें हाँ तेरे साथ हूँ मैं

भीनी मिट्टी की खुशबू लिए परत दर परत
जो तन मन महकाये वो बरसात हूँ मैं
गरजें कभी जो काले बादल आसमान में
सिमट के लिपटने को मेहबूब हाँ तेरे पास हूँ मैं

# ~* मन की पाती *~

प्रीत की रीत से मीत मिले
तू भाया मन को साथी
लब्जों में आज फिर
मैं लिखता मन की पाती

प्यारी लुभाती बातें हैं
बातों में तूँ ही होता है
मीठे मीठे सपनों में
तू ही आता खोता है

अब तो मन की सरगम भी
तेरी ही तान सुनाती
लफ्जों में आज फिर
मैं लिखता मन की पाती

निश्छल सुंदर प्रेम तेरा
छोभ लिया ये हृदय मेरा
सच नेह भी नील समंदर है
लहरों में उलझा है ये गेरा

हुआ मृदंग अब अंग अंग
सुन साँसें भी गीत हैं गाती
लफ्जों में आज फिर
मैं लिखता मन की पाती

है मन में आस की तूँ मिले
हाँ सतरंगी हर फूल खिले
प्यारी आँखों में निहार लूँ
साये में तेरे हर दर्द सिले

मिलने की सुध में बेसुध
तेरी खुशबू महकाती
लफ्जों में आज फिर
मैं लिखता मन की पाती

# ~* संवर जाएँगे *~

एक ज़रा से लम्हे की क्या बिसात साक़ी
गुजरना है फ़ितरत गुजर जाएँगे
तुम यूँ ही मुस्कुराते रहो उम्र भर
हम तुम्हें देख कर ही संवर जाएँगे

बीते लम्हे भी हंसी थे और होंगे है वादा
बहुत दूर चलना है कर लो इरादा
एक पात तुम हो तो मैं पात दूजा
दरिया लगन का बहता रहा जो बहेगा और जादा

काँटे तो हैं! पर फूल सुंदर वही है
ज़रा नोक झोंक कहाँ होती नहीं है
काँटे भुला कर जो ख़ुशबू बिखेरे
मुस्कुरा कर जियें हाँ यही ज़िंदगी है

घड़ी घड़ी कर एक अरसा गुजर गया
हो खुशनुमा पल पल ये वादा कर गया
आज एक वादा और की ये रिश्ता निभाएँगे

तुम यूँ ही मुस्कुराते रहो उम्र भर
हम तुम्हें देख कर ही संवर जाएँगे

# ~* तेरा चेहरा *~

तेरा चेहरा है हर तरफ़ या हर चेहरे में है तूँ
तूँ रूह है मेरी या मैं तेरा इश्क़ हूँ
क्यों लगे तूँ साथ है मेरे जैसे हो हमसाया
आँखों में बहती चमक हूँ या कोई अश्क़ हूँ

लहरों सी बहती मौज हूँ या हूँ कोई किनारा
क्या तड़पता तूँ भी कहीं तो दे दे कोई इशारा
ढूँढता हूँ तेरे निशां गली गली चारो पहर
बेजान सी ये दुनिया लगे बेरंग हर नज़ारा

तूँ मुस्कुराता है कहीं क्यूँ आहटें सुनता हूँ यहाँ
रास्ते तो एक थे बस जुनूं रह गया कहाँ
एक डोर से बँधे बनना था दिया और बाती
महज़ इत्तेफ़ाक़ ही होगा वक्त ले आया जहाँ

एक ख़लिश है ज़हन में या तुझे पाने की ज़ुस्तज़ू
इन फ़िज़ाओं से करूँ बातें जैसे हो तेरी रंगों बू

यूँ लगे तेरी मौजूदगी है हो तेरे हाथों में मेरा हाथ
जैसे हवाएँ भी करती बातें हों लाती तेरी ही ख़ुशबू

आँखों में बहती चमक हूँ या कोई अश्क़ हूँ
तेरा चेहरा है हर तरफ़ या हर चेहरे में है तूँ

# ~* ऐ ज़िंदगी *~

ऐ अल्हड़ बेतरतीब बदहवास ज़िंदगी
तू देख मेरी रवानगी
संभलना जो होगा संभल जाएँगे
वो कहते है बड़ी दीवानगी है हवाओं में
एक झोके से मचलना है तो मचल जाएँगे

गुज़ारिश बस इतनी है की मिले तूँ कहीं
फिर एक दफ़ा उन हसीन वादियों के पहियों पे
सर्द ठिठुरती मदहोश फ़िज़ाओं में
सिफारिश हो गर फिसलना ही है हाँ! फिसल जाएँगे

फिर एक अदा हो तूँ फिर से तबाह हो
या मिल जा रसूख सी की जीने की वजह हो
आ धधक जा आग सी के रोशन हो मंज़र
मोम सा हो पिघलना बेशक! पिघल जाएँगे

भटकना ही क्यूँ! जब नज़र ही सफ़र है
एक फेर पर ही ये ग़ज़ब सा असर है
तूँ ताक मुझको मैं तकूँ राह तेरी

ना माही, ना माँझी, ना साया, ना साथी
बिफरना जो चाहे चल, घड़ी भर बिफर जाएँगे

ऐ अल्हड़ बेतरतीब बदहवास ज़िंदगी
सुन! संभलना जब होगा संभल जाएँगे
वो कहते है बड़ी दीवानगी है हवाओं में
एक झोके से मचलना है तो मचल जाएँगे

# ~* पहली दफ़ा *~

हाँ वो पहली दफ़ा था

कहना वो तुमसे कुछ कपकपाते लबों से
सुनना तुम्हारी वो सताती हदों से
राज़ी थे दोनो ना कोई ख़फ़ा था
हाँ वो पहली दफ़ा था

करना वो बातें और खाना बनाना
दिल चाहता हो फिर भी दिल में छुपाना
लगी भूख का तो बस एक बहाना
हँसना यूँ ही ख़ुद भी और उसको हँसाना
जाने अंजाने वो कैसा मज़ा था
हाँ वो पहली दफ़ा था

किसी नज़ारे से जैसे मिले हों
कहीं कुछ इशारों के सिलसिले हों
पानी पे जैसे बूँदे हों झर झर
मिला वो ऐसे जैसे दिल में छुपा था
हाँ वो पहली दफ़ा था

बातों का झुर्मूट हो कोई लगाए
है बहने को जैसे सागर छूपाये
खिल जाए जैसे कली सी किरण से
जैसे मिले हो कई बिछड़े ज़नम से
राहों में हो कोई जैसे हमसफ़ा सा
हाँ वो पहली दफ़ा था

# ~* उम्र भर *~

बात गर तुम्हीं से है तो क्यूँ ना हो ये उम्र भर
रात गर तुम्हीं से है तो क्यूँ ना हो ये उम्र भर

वो कहते हैं उम्र है चार दिन की चाँदनी
चाँद गर तुम्हीं से है तो क्यूँ ना हो ये उम्र भर

टिटिहरी टीटीह रही पीहे पीहे कह रही
स्वाति को तरस रही फिर भी टीहे उम्र भर

रोशनी तुम्हारी आँखें है चाशनी तुम्हारी बातें
डूबना गर इश्क़ है तो क्यों ना हो ये उम्र भर

शायराना सा समा है आशिक़ाना हर्फ़ भी
शायरी गर तुमसे है तो क्यों ना हो ये उम्र भर

देखने को तरसे नैन दरस बिन आए न चैन
बेचैनी ही गर है रफ़ीक तो क्यों ना हो ये उम्र भर

साथ यूँ ही रहेगुज़र तेरा मेरा होना अगर
चल संग ही चले सफ़र और क्यों ना हो ये उम्र भर

# ~* मेरा ख़्वाब *~

ज़िंदगी के हर सवाल का जवाब हो तुम
किस ज़ुबाँ में कह दूँ के मेरा ख़्वाब हो तुम

सोचता हूँ तोड़ दूँ ये ज़माने की बंदिशें
इस हुजुम से होगीं शायद उम्र भर की रंजिशें
हिमाक़त तो होगी फिर उस रूह से
जिस मुकम्मल इश्क़ का रुवाब हो तुम
रीत, प्रीत, अश्क़, मीत एक तरफ़, जलाल तो ये है

के ज़िन्दगी के हर सवाल का जवाब हो तुम
किस ज़ुबाँ में कह दूँ के मेरा ख़्वाब हो तुम

एक पल को तेरा अक्श ज़हन से निकाला नहीं जाता
कोशिशें हैं दिल से हों दूर सौदाई है मतवाला नहीं जाता
एक अरसा है जो शायद गुज़रना है तेरे बग़ैर
और एक लम्हा है जो मुझसे गुज़ारा नहीं जाता
जोर आजमाइश या ज़ुस्तज़ू सब एक तरफ़, मलाल तो ये है

ख़ुद की ही रूह से इस अनबन का सबाब हो तुम
किस ज़ुबाँ में कह दूँ के मेरा ख़्वाब हो तुम

एक दफ़ा कुबूल कर ये बेपरवाह इश्क़ ऐ फ़ितूर
इल्म तो तुझे भी होगा, कसक कहीं तो होगी ज़रूर
आरज़ू तो ये है की बादलों पे तेरा चेहरा बना दूँ
चाँद तारों के ख़ेमे से उसपे पहरा लगा दूँ

फ़क़त ये सब दिले नादानियाँ हैं फिरहाल तो ये है
के चाँदनी रात में फैला हुआ रौशन मेहताब हो तुम

किस ज़ुबाँ में कह दूँ के मेरा ख़्वाब हो तुम
ज़िंदगी के हर सवाल का जवाब हो तुम

# ~* भर नज़र *~

है तमन्ना के तूँ इस क़दर देख ले
हो काफ़ी नहीं भर नज़र देख ले

बन के रंगरेज झूमूँ फिर हो ना सेहर
अंधेरे - उजाले की हो ना फ़िकर

हूँ बस तुम्हारा रहेगुज़र देख ले
हो काफ़ी नहीं भर नज़र देख ले

मस्ती में खो जाऊँ लहरों की तरह
पल में सिमटूँ बिखरूँ पहरों की तरह

है सफ़र ये सुहाना संग तेरे हमसफ़र
रंगों भरी जैसे सतरंगी धनुष की तरह

आ थामें हाथ काँधे पे तूँ सर टेक ले
हो काफ़ी नहीं भर नज़र देख ले
है तमन्ना के तूँ इस क़दर देख ले

# ~* तूँ मेरी क्या लगती है *~

आती जाती हर सांस से ज़ख्मों को हवा लगती है
ऐ हसीं ज़िंदगी बता तो सही के तूँ मेरी क्या लगती है

हूँ बेवजह फ़िज़ूल सा या वजूद को ढूंढता हुआ
कुछ है हसीं, कुछ दर्द सा, कुछ सुर्ख सा चटका हुआ

कभी है ज़हर तूँ हर पहर फिर भी क्यूँ दवा लगती है
ऐ हसीं ज़िंदगी बता तो सही के तूँ मेरी क्या लगती है

मीलों चलूँ मैं संग तेरे सब रागीनी सब नूर है
वो नज़र आता नहीं शायद ठिकाना दूर है

हूँ किधर अब किस डगर बन दीवाना गुम गया
पग पग निहारूँ या बिसारूँ कैसा हुआ फ़ितूर है

पैरों में हो बेड़ियाँ जैसे हर सांस भी बेवजह लगती है
ऐ हँसी ज़िंदगी बता तो सही के तूँ मेरी क्या लगती है

नशा चढ़ा है मुझको या सारा जहाँ नशे में है
पिटारा खुला है दर्द का या मर्ज़ बस्ते में है

यूँ ही किसी का हो लिया के वो बस फ़िज़ूल था
आशियाँ अब बन गया या अभी रस्ते में है

मुस्कुराने की अदा भी अब मुझे एक सजा लगती है
उफ़्फ़ ज़िंदगी अब तो बता के तूँ मेरी क्या लगती है

आती जाती हर सांस से ज़ख्मों को हवा लगती है
ऐ हसीं ज़िंदगी बता तो सही के तूँ मेरी क्या लगती है

# ~* मुकम्मल इश्क़ *~

मुकम्मल नहीं ये इश्क़ गर ना हो तूँ क़रीब
ख़्वाहिशें मेरे दिल की भी बन रहीं मेरी रक़ीब
ख़ामियाज़ा है तेरी एक मुस्कान पे मर मिटने का
सोचता हूँ दर बदर ले आया ये कहाँ नसीब

राबता भी तुझसे ही आसरा भी तुम ही हो
हर हर्फ़ लिखा नाम तेरा क़ाफ़िया भी तुम ही हो
चाहने के सिवा तुझे दूजा न कोई काम है
राह मिले न अब कोई और वज़ह भी तुम ही हो

बेजारियों में अब जो तुम याद आते हो
दिल को रुसवा कर दो आँसू बहा लेते हैं
गोशा गोशा पूछ रहा ज़रिया मुलाक़ात का
फ़ासले मिटानें अक्स तेरा आँखों में छुपा लेते हैं

ये जो हवाएँ आती हैं तेरी सदाएँ लाती हैं
आयतों में यादें पिरोए तेरी वफ़ाएँ लाती हैं
पहली किरन भी ओज की लगे है बाँकपन तेरा
सिंदूरी शामें भी अब तो तेरी अदाएं लाती हैं

एक दफ़ा क़बूल कर ये बेपरवाह इश्क़ ऐ हसीब
मिल जा कहीं फिर से तोड़ सारी रस्में अजीब
हाँ! है ये सच उतना ही जैसे समुन्दर के मोती
मुकम्मल नहीं ये इश्क़ गर ना हो तूँ क़रीब

# ~* तेरी तस्वीर *~

भर नज़र देखना तेरी तस्वीर को
अब तो मेरा रियाज हो गया
यूँ तो ना था पहले कभी
जाने मसला क्या ये आज हो गया

था एक खोया सा मंदिर कहीं
तसव्वुर में सदियों से छुपाया था जिसे
हाँ वही सँधली सी सूरत हो तुम
छुप के बैठा घरौंदे में दिल
अनायास ही परवाज़ हो गया

यूँ तो ना था पहले कभी
जाने मसला क्या ये आज हो गया

हर सुबह जागना और तुम्हें सोचना
खुल जाए ना ख़्वाब फिर आँखें भींचना
बंद आँखों से भी तुमसे निगाहें मिलें
गुम हो जाने को तुझमें तरकीबें खोजना

वादा मिलने का सनम ख्वाबों में करूँ
फिर सोचूँ कहीं ये ज़्यादा तो नहीं
बजती सारंगी का जैसे कोई साज हो गया
यूँ तो ना था पहले कभी
जाने मसला क्या ये आज हो गया

भर नज़र देखना तेरी तस्वीर को
अब तो मेरा रियाज़ हो गया

# ~* काफ़ी है *~

अब और खुदा से क्या मांगूँ
बस तेरा मुसकाना काफ़ी है
ढा ले सितम या दे मरहम
सौ और गुनाह की माफ़ी है

ज़िरह की पीर जो टीसती है
भीतर ही भीतर रिसती है
इस मर्ज़ को तर्ज़ लगाने को
एक तेरा नाम ही राफ़ी है

आँखों से ना होना ओझल
हिज़्र में सूरत वो बसती है
मेरे हर संग का रंग है तूँ
वो ज़ीवन के मोल भी सस्ती है

संग धीर धरूँ क्या और कहूँ
पायल की छम छूम सुनता रहूँ
तू चल पैरों पे साथ मेरे
हर मैल की फिर तो साफ़ी है

अब और खुदा से क्या मांगूँ
बस तेरा मुसकाना काफ़ी है

# ~* कुछ लब्ज *~

कुछ लब्ज हैं इबादत के, कुछ आरज़ू भी लबरेज़ है
कुछ है छुपाना ख़ुद से ही, कुछ ख़्वाहिशों सी तेज़ है

है ये मंज़र बेख़ुदी का, अदायें भी रंगीन हैं
ख़ुद ही ख़ुद से बातें हैं, दिल सौदाई रंगरेज है
कुछ लब्ज हैं इबादत के, कुछ आरज़ू भी लबरेज़ है

निगाहों के पर्दे तले, कुछ छुपाए छुपता नहीं
हाँ परिंदों के फ़लक सा, एक पग रुकता नहीं
आयिनों की तश्तरी में, हो परोसा सुर्ख़ सा

गुदगुदाता सा सबब हो, रूहों सा चंगेज़ है
कुछ लब्ज हैं हिफ़ाज़त के, कुछ आरज़ू लबरेज़ है

है सुगंध सा बिखरा हुआ, कुछ मोम सा पिघला हुआ
एक पल में हो धूमिल कहीं, फिर चटक सा गहरा हुआ
समेटो तो सिमटे नहीं, पर सिलवटों में परत सा

हर घड़ी एक दूजा रंग है, या फ़क़त नज़रों का फेर है
ये इश्क़ है या अश्क़ है, है जो भी दिलावेज़ है

कुछ लब्ज हैं इबादत के, कुछ आरज़ू भी लबरेज़ है
कुछ है छुपाना ख़ुद से ही, कुछ ख़्वाहिशों सी तेज़ है

# ~* जाओगे कहाँ *~

तुम मुझसे परेशां होके जाओगे कहाँ
हम मुहब्बत करेंगे इतनी, के लौट आओगे यहाँ
फ़र्ज़ करो कि दूरियाँ दरम्याँ बन जाएँ
हम तुम्हें याद कर हिचकियों से परेशां कर देंगे
मेरी इन यादों से खुद को छुपाओगे कहाँ

तेरी तस्वीर तो मेरी निगाहों में बसी है
ये नज़र तो बस तुमपे आ रुकी है
अपने तसव्वुर से मेरे एहसास को लगा के रख लो
मेरा साया तो एक हवा का झोंका है
इन हवाओं में खुद को समेट पाओगे कहाँ

हाथों में डाले हाथ चलना, तो प्यार का सलीका है
रूठना मनाना तो इश्क़ जताने का तरीक़ा है
हो जाओ कभी रुसवा तो, दो पल में गिले मिटा लेना
तड़पाना चाहो ग़र, तो तुमको किसने रोका है
पर सता के मेरे दिल को, तुम भी मुस्कुराओगे कहाँ

तुम मुझसे परेशां होके जाओगे कहाँ
हम मुहब्बत करेंगे इतनी, के लौट आओगे यहाँ

# ~* तेरा दीदार *~

एक नज़र तुझे देख लूँ जी लूँगा सनम
घड़ी भर तेरी हसीं निगाहों से पी लूँगा सनम

एक आस लगाये बैठा हूँ तेरे दीदार को
दर्द-ए-उल्फत तेरे दामन से सी लूँगा सनम

कुछ कवायतें जो इस फ़रियादी की हैं
कुछ रवायतें जो कशि मियादी की हैं

तेरे चिलमन में जो हया है बसी
उन काफिरों ने मगशूल आज़ादी की हैं

आज़ाद पंछी की तरह पर फैलाए ख़ुशनुमा
एक लम्हा तेरे दीदार से जी लूँगा सनम

जाने क्यूँ बंदिशें हिमाक़त करतीं हैं
जाने क्यूँ रंजिशें दिलों दिमाग़ में रहतीं हैं

कुछ अरज़ू भी है कुछ ज़ुस्तज़ू भी
भर तुझे निगाहों में ख़ुद को सँभालूँगा सनम

घड़ी बस घड़ी भर नज़रें तो मिला दिलबर
एक उस पल में सदियाँ ज़ी लूँगा सनम

एक नज़र तुझे देख लूँ जी लूँगा सनम
घड़ी भर तेरी हसीं निगाहों से पी लूँगा सनम

# ~* उसकी आदत *~

याद दिलाना मेरी फ़ितरत है
और भूल जाना उसकी आदत

जताता हूँ हर बार की मुहब्बत है तुमसे
करूँ और क्या मेरी इबादत है तुमसे
मैं ये इकरार करता रहता हूँ फ़क़त
और भूल जाना उसकी आदत

यूँ तो एक ज़रा सा, तिनका आँखो में पड़ा
लहरों की एक नदी बह चली मुहानों से
मँझधार में हूँ खड़ा कश्ती सम्भालने को
तूँ चला तो चप्पू किसी भी बहाने से

इतराता हूँ पल पल के वो ही जन्नत है
और भूल जाना उसकी आदत

काग़ज़ की कोठरी में दरिया को पनाह
ऐसा कहीं होता भला कोई दे बता
रसूक हूँ, रुआब हूँ, भला हूँ, ख़राब हूँ

समुंदर गर है इश्क़ तो मैं भी बेहिसाब हूँ
मुकम्मल है अक़्थ ये उस ख़ुदा की रहमत है

याद दिलाना मेरी फ़ितरत है
और भूल जाना उसकी आदत

# ~* समझ लेना के मैं हूँ *~

तेरी पलकों पे हो किसी के छूने का एहसास
समझ लेना के मैं हूँ
तेरी ज़ुल्फ़ों में हो किसी के उँगलियों की थिरकन
समझ लेना के मैं हूँ

जो अँगड़ाइयाँ ले तूँ कहीं ऊँघ के
तेरे माथे पे किसी के चूमने का हो आभास
कोई ले ले तुझे अपनी बाँहों में
और तेरी गर्म साँसें हो बदहवास
समझ लेना के मैं हूँ

महसूस करे जो तूँ ख़ुद को ख़्वाबों में कहीं
तेज़ दौड़ती धड़कनों का सा हो तुझे बेसास
मन और दिल दोनों के रास्ते हो जाएँ अलग
तेरे ख्यालों में जगाये तुझे कोई अनायास
समझ लेना की मैं हूँ

जब जुस्तजू तेरी भी हो के मुस्कुराये तूँ
आरज़ू और भी के खिलखियाये तूँ

वादियों में हो फूलों के खिलने से रंग
जब किसी के साये से भी शरमाए तूँ
समझ लेना की मैं हूँ

# ~* इतनी सी बात *~

बात इतनी सी है, पहले बोलेगा कौन..
शब्द भारी है इतने, पहले तोलेगा कौन..
कहना बहुत है, समझाना भी तो है
रीत पुरानी है, ज़माना भी तो है

गिरह दिखती भी नहीं, खोलेगा कौन..
बात इतनी सी है, पहले बोलेगा कौन..

पल भर में यूँ तो, दरिया बहाना है
दो पल ही डोरी है, इतना फ़साना है
जीवन है, प्रीत है, साक़ी ये रीत है
दो धार एक हो ना हो, बहते ही जाना है

मझधार में नैय्या, मझोलेगा कौन ..
बात इतनी सी है, पहले बोलेगा कौन..

कसक सिहरती है, ख़ुद में सिमटती है,
धुँध हो बारिश हो, रोशनी से ही छँटती है

एक पहल ही तो है जो करनी है शायद,
पर नाज़माइश उस बात की खटकती है

गिरह दिखती भी नहीं, खोलेगा कौन..
और बात इतनी सी है, पहले बोलेगा कौन..

शब्द भारी हैं इतने, पहले तोलेगा कौन ..
बात बस इतनी सी है, पहले बोलेगा कौन..

# ~* आइनों में क्या देखूँ *~

मशरूख़ हुआ मैं इश्क़ में
क़वायतो में अब क्या रेखूँ
एक अक्श है अब आँखों में
आइनों में मैं क्या देखूँ

नज़रिया बदलने लगा है सब हसीं होने लगा है
रंगीन हुआ है सब कुछ या रंग भरने लगा है
है गुलाबी बसंत हमदम या खिले कई गुलाब हैं
कोरे काग़ज़ सा ये दिल रंगरेज होने लगा है

कोई छोह अब जगा है या रोग सा लगा है
तन्हाइयों का क्या करूँ ये जोग ही भला है
है शबाब् अब हर तरफ़ या सिंदूरी शाम है
खुशनुमा हर रोम है अब दूर हर ख़ला है

आयतों की क्या बंदिश हर शक्स जानता है
आँखें भी कह उठीं है और दिल भी मानता है
हर ज़िक्र में वही अब हर फ़िक्र में समाया
ज़हन में जो छुपा है ख़ुद को पहचानता है

अब तो कशिश है बाक़ी
के तेरे काँधे मैं सर टेकूँ
तेरा अक्श है इन आँखों में
आईनों में मैं क्या देखूँ

# ~* मिले हो अभी *~

एक अरसा हुआ हाथ थामे तेरा
यूँ लगे फिर भी जैसे मिले हो अभी

है कमी ना कहीं एक होने से तेरे
भर के दामन मिलीं हैं ख़ुशियाँ सभी
एक अरसा हुआ हाथ थामें तेरा
यूँ लगे फिर भी जैसे मिले हो अभी

एक वो दौर था गुम थे नैनों में तेरे
जोड़ते शब्दों को सोचें क़ाफ़िया मिल गया
कदम दो चले भर घड़ी दो घड़ी
देखा तुझे और लगा साथीया मिल गया

गए सावन कई जो मन हुआ बांवरा
यूँ लगे फिर भी जैसे मिले हो अभी

हूँ कब से महफ़ूज़ तेरी आग़ोश में
जैसे हिफ़ाज़त करती तुम कोई ताबीज़ हो

हो समंदर में कोई मदमस्त सी लहर
या दिल लगाने की कोई तहज़ीब हो

मिले तुमसे लगा मिलना ही था कभी
एक अरसा हुआ हाथ थामे तेरा
यूँ लगे फिर भी जैसे मिले हो अभी

# ~* तुम हो कहाँ *~

तू है कहीं फ़िज़ाओं में, या जाने है कहाँ
एक याद है जो पिरोए है आज भी
है तो तू अपना ही और दिले ख़ास भी
मिल के भी दूर है स्वाति की प्यास सी

भुला दें गर यादों से, छुप के दिल से जायें कहाँ
तू है कहीं फ़िज़ाओं में, या जाने है कहाँ

हाँ है कहीं एक कमी सी, रोता तो तूँ भी होगा
है मेरी पलकें गर नम, आँखे भिगोता तो तू भी होगा
कसक सी है मन में, तुझसे उस आख़िरी मुलाक़ात की
जैसे रुक गया हो वक़्त एक उस अनकहि बात सी

अरसे से जुदाई के ग़म में, होता तो तू भी होगा
हाँ है कहीं एक कमी सी, रोता तो तूँ भी होगा

गर मिल जाए कोई वजह, वापस बुला लूँ तुझे
है सैकड़ों राह यूँ तो, जो आए मुझ तक वो बता दूँ तुझे

अँधेरी गलियों में आज भी, एक आहट के एहसास से
यूँ तुमसे मिलने की आस, किसी भाषा में समझा दूँ तुझे

यूँ दूरी बना के जो एक रोज़, रूठा और खो गया सा तूँ
एक याद है जो पिरोए है आज भी
है तो तू अपना ही और दिले ख़ास भी

तू है कहीं फ़िज़ाओं में, या जाने है कहाँ
भुला दें गर यादों से, छुप के दिल से जायें कहाँ

# ~* अल्फ़ाज़ *~

तवज्जो दूँ जो लब्ज्जों को, अल्फ़ाज़ तिलमिलाते हैं
दो शब्दों के पहलू में तो रिश्ते बदल जाते हैं
जाने क्यूँ है आसान बड़ा दिल को दुखा देना
मरहम बन के हर नक़ाब, बस घाव बदल जाते हैं

यूँ तो देखा एक झरोखे से पतंगबाज़ी का सपना
मेरी हर चढ़ती मंज़िल पे हो सहारा जैसे अपना
एक मुलाक़ात, और तकरार भी क्या ख़ूब थी
दूर तक बस धुल है अब और एक टक राह तकना

कभी समझ आता नहीं या शायद नासमझ हूँ मैं
है कोई वजूद मेरा या बादलों की ग़रज़ हूँ मैं
हर परछाईं अपनी यहाँ पहचानने की देर है
अधीर भी हुँ क्या पता या उतावली धीरज हूँ मैं

सोचता हूँ तोड़ दूँ ये क़ाफ़िले की बंदिशें
देख लेंगे जो भी होंगी अब हुजूम की रंजिशें

आदमी हूँ एक फ़र्ज़ का सोच अरमां संभल जाते हैं
दो शब्दों के पहलू में तो रिश्ते बदल जाते हैं

तवज्जो दूँ जो लब्ज्जों को, अल्फ़ाज़ तिलमिलाते हैं
दो शब्दों के पहलू में तो रिश्ते बदल जाते हैं

# ~* एक उम्मीद *~

एक उम्मीद वर तुमसे लगाई थी हमने
क्या पता था तुम भी काफ़िर निकलोगे
मान बैठे थे तसव्वुर में कहीं तुम्हें अपना
ना समझे तुम किसी और की जागीर निकलोगे

क़ाफ़िला ये ज़िंदगी है हज़ारों राहगीर यहाँ
ठहर जाए जो एक पल ऐसी कोई ठौर कहाँ
परिंदे जैसे ओझल हो जाएँ खुले आसमान में
तूँ भी खो गया साक़ी अब तेरी राह मेरी ओर कहाँ

ईमानदारी का ख़ामियाज़ा तो शायद मेरे काबे में था
खो के ख़ुद को कहीं तुम्हें आइना जो समझ बैठे
अक़्स मेरा भी हँसता है कहीं मेरी नादान उम्मीदों पर
साया भी मेरा खमोश एक टक़ निहारता हो जैसे

गर मिलें इत्तफ़ाक़न कहीं मेरी नज़रों से नज़रें मिला लेना
उन पुरानी गलियों से कहीं जो एक बार निकलोगे

ख़ैर रसूख़ भी बदलेगा और एहतराम भी पल पल
मर्ज़ ना सही ज़हन में तुम कभी तो ज़ख्म-ए-यार निकलोगे

एक उम्मीद वर तुमसे लगाईं थी हमने
क्या पता था तुम भी काफ़िर-ए-ऐतबार निकलोगे

# ~* तेरा एहसास *~

तूँ है नहीं कहीं पर महसूस हर रोज करता हूँ
जाने है अनजान या कोई पहचान भी है
मगशूल है दिल फ़िज़ाओं में हैरान भी है
रंगरेज़ है तूँ कोई शायद, मैं अपने रंग की खोज करता हुँ

उड़ा ले जा मुझे अपनी घटाओं में कहीं
जिस राह हो तेरी महक़ एक घरोंदा हो वहीं
बन जाऊँ इन बेतरतीब मौज़ों का साथी
फ़िरदौस कर दे फ़क़त मस्तानी हवाओं में कहीं

ये बारिश के छींटे बहते पानी की वो धारा
ये छम छम वो कल कल और नदियाँ किनारा
चले हाथ में हाथ यूँ ही पैयाँ भिगोयें
मिल जाए ओ साथी जो तेरा सहारा

मिलें किसी रोज़ ये ख़्वाहिश हर ओज करता हूँ
जाने पाना है क्या, क्यूँ ख़ुद को फ़िरोज़ करता हूँ

ना दिखती है नईया, ना दिखता खिवय्यिया
ख़ुदा बन गया है तूँ मैं अज़ान हर रोज करता हूँ

तूँ है नहीं कहीं पर महसूस हर रोज करता हूँ
ख़ुदा बन गया है तूँ मैं अज़ान हर रोज करता हूँ

# ~* उसका ख़याल *~

यूँ तो फ़ितरत नहीं हमारी के किसी का इंतज़ार करें
जाने क्यूँ आता है उसका ख़याल और हम मुस्कुरा देते हैं

एक दफ़ा ये हुजूम दे इजाज़त या कर दे उसको इत्तला
रखते हैं हम भी तमन्ना बस जज़्बात दिल में दबा देते हैं

एक डर सा है के इकरार-ए-ताबीर क्या होगी
तस्वीर लिए ज़हन में उसकी और मेरी जागीर क्या होगी

हमें तो उनका मुस्कुराना अच्छा लगा था ना समझे उलफ़त होगी
मिल जाए वो कहीं इत्तफ़ाक़ से इससे हसीन तक़दीर क्या होगी

उसने खोलीं नहीं हथेलियाँ कभी, मुद्दतों से उसके मुकद्दर बने बैठे हैं
वो आए ना आए नज़र हम इश्क़-ए-इबादत किए बैठे हैं

कौन जाने उस क़ुदरत की अमल अब रज़ा क्या होगी
परछाईं भी नदारत है उसकी और हम मुहब्बत किए बैठे हैं

अनजान हैं उसके काबे से गुज़ारिश करें भी तो कैसे
नाचीज़ हैं पहलू में उसके भला दे क्या! लो वफ़ा देते हैं

ऐ मालिक सुन ज़रा फ़रियाद या कर दे उसको इत्तला
सैलाब है हिजरे में हमारे जज़्बातों का पर दिल में दबा देते हैं

यूँ तो फ़ितरत नहीं हमारी के किसी का इंतज़ार करें
जाने क्यूँ आता है उसका ख़याल और हम मुस्कुरा देते हैं

# ~* फिर से इश्क़ *~

मत कुरेदो उन अल्फाजों को साक़ी
कहीं फिर से तुमसे इश्क़ ना हो जाए

महफ़ूज़ जिन्हें रक्खा है एक अरसे से
दर्द वो कहीं अफ़साना ना बन जाए
छुपाया है जो ख़ुद से ही कम्बख़्त वो जज़्बात हैं
इबादत भी है इल्म भी कुछेक ऐसी मुलाक़ात हैं

अब और कहने को क्या रह गया बाक़ी
ना भुलाने वाली एक मुश्क ना हो जाए
मत कुरेदो उन अल्फ़ाज़ों को साक़ी
कहीं फिर से तुमसे इश्क़ ना हो जाए

एतिहात ईमान सब ताख़ पे रख दिया
दिल निकाल बस तेरी एक बात पे रख दिया
क़सूर मेरा क्या ये तो मुहब्बत का जुनून है
तूँ मेरा ना सही ख़ुश है बस ये सुकून है

गुफ़्तगू के दरमायाँ, आशिक़ी है ज़मा की
ये एहतराम, कोमल प्रेम, ख़ुश्क ना हो जाए
मत कुरेदो उन अल्फ़ाज़ों को साक़ी
कहीं फिर से तुमसे इश्क़ ना हो जाए

# ~* मेरी आरज़ू *~

कोई बंदिश नहीं होती, कोई पैग़ाम नहीं होता
कोई मर्ज़ नहीं होता, कोई पयाम नहीं होता
यूँ तो होती है हर रोज़ शामों सहर
बस! मेरी आरज़ू का कोई अंजाम नहीं होता

हर रोज़ निकलता हूँ एक अरमां लिए दिल में
तनहा ना दिखूँ मधोश किसी महफ़िल में
ठहर जाएगा ये पहर भी यकीं हर शाम नहीं होता
होता तो है कोई दिल में, महज़ कोई नाम नहीं होता

चलता जा रहा हूँ जैसे ना कोई राह ना हो डगर
हूँ शायद मगशूल ख़ुद में, है ना कहीं कोई मगर
जैसे मंज़िल निहारती है मेरे अक्स को कहीं
साहिल है दूर मुझसे और कोई आता नहीं नज़र

एक डोर से बंधा हूँ जिसका कोई ओर नहीं
एक राह है लम्बी इत्तफ़ाक़न कोई छोर नहीं
जैसे मुसाफ़िर का कोई मुक़ाम नहीं होता
फ़कत मेरी आरज़ू का कोई अंजाम नहीं होता

हाँ! होता तो है कोई दिल में
महज़ कोई नाम नहीं होता

# ~* गम-ए-दिल *~

निचोड़ के देखा दिल को, ग़मों के तार निकले थे
कुछ बंदिशो की रवायत, तो कुछ कुचले आरज़ू थे
कहीं अरमानों की बली, तो कहीं तनहा चांदनी

वक़्त की तिजोरी में यूँ तो, मरहम हज़ार निकले थे
निचोड़ के देखा दिल को, ग़मों के तार निकले थे

यक़ीन नहीं होता फ़क़त, वक़्त चलता गया
ना रुके हम ना हुई सहर, कारवाँ बदलता गया
एक एक घाव की, हज़ारों है बातें
सुनने बैठा जो घावों की, बस बातें बदलता गया

एक धार सी मेरी आँख से हर बार निकले थे
निचोड़ के देखा दिल को, ग़मों के तार निकले थे

वक़्त है माँझी अगर तो नाँव सी है ज़िंदगी
लहरों की गोद में बेमंज़िल सी बह रही
हवायें भी रूख मोड़ के बेवफ़ाई सी कर गयीं

एक मौज सी दौड़ती जिंदगानी हो जैसे ठहर गयी
अपनों की महफ़िल में ग़ैर पहरेदार निकले थे

वक़्त की तिजोरी में यूँ तो, मरहम हज़ार निकले थे
निचोड़ के देखा दिल को, ग़मों के तार निकले थे

# ~* दिल टूटता क्यूँ है *~

कोई गर चाहता है तुझे! तो रूठता क्यूँ है?
नादान ऐ दिल आख़िर! तूँ टूटता क्यूँ है?

यूँ सिमट गया ग़लीचे में सिलवटों की तरह
किसी अपने की राह देखता हो जैसे
परछाइयों में शायद कोई एक होगा
यहाँ भीड़ है हर जगह पर वो है नहीं कहीं
जिसकी आरज़ू है पल पल तुझे
उसको तुझे पाने की जुस्तजु भी नहीं

जो तेरा नहीं उसे ढूंढता क्यूँ है?
नादान ऐ दिल आख़िर! तूँ टूटता क्यूँ है?

क्या काँच का है तूँ? पर आवाज़ क्यूँ नहीं?
यूँ मायूस हो गया है कोई परवाज़ क्यूँ नहीं ?
क्यूँ छेड़ता है तूँ वही साज़ हर पल
जब किसी के होने का एहसास ही नहीं

वो ख़्वाहिश, वो बंदिश, वो अन्दाज़-ए-बायाँ
गुम गये सभी पहली बारिश की तरह
कभी साँझ की किरण भी लौटी है भला
बेज़ार से हर पहर लगने लगे फिर भी

ख़ुद ही ख़ुद से तूँ यूँ जूझता क्यूँ है?
नादान ऐ दिल आख़िर! तूँ टूटता क्यूँ है?

# ~* अश्कों का क़ाफ़िला *~

कोई तकल्लुफ़ नहीं है मेरी ज़िंदगी से बाक़ी
ये अश्कों का क़ाफ़िला है जो निकला है आशियाँ से

अब तो सुकून ये है की हम भी हो चले हैं संग
क्या राबता रहा हमारा इस नीले आसमाँ से

अपने ही सुर्ख ज़ख़्मों को कुरेद कर कहतें हैं साक़ी
ज़हन में कोई बैर न रखना तुम अपने इस गुलिस्ताँ से

ग़म-ए-दिल को निकाल कर कहीं रख भी दूँ अगर
सोचता हूँ के डरना सही है या नहीं फ़लसफ़ा से

आदमी हूँ फ़र्ज़ का या फ़रेबी ना जानता हूँ
जो हुआ वो मुश्क था या इश्क़ था समाँ से

है डगर ही हर पहर ठौर अब दिखती नहीं
कोई ठिकाना दे बता पूछता फिरता हूँ जहाँ से

एक एक अश्क़ का हिसाब लेना है हुज़ूर
बड़े बेआबरू से निकले समेटा ख़ुद को वहाँ से

कोई ऐतिहात नहीं है इस बंदगी में बाक़ी
ये अश्कों का क़ाफ़िला है जो निकला है आशियाँ से

# ~* हसीं और भी हैं *~

चलो छोड़ो मुहब्बत के नासूरों को
गमगीन और भी हैं
हा माना की तूँ भी है नाज़नी
पर हसीं और भी हैं

दिल लगाया था तुमसे, तुम्हें राज़दार समझ के
तुम तो वफ़ाओं के भी ख़रीदार निकले
हम तो ग़रीब हैसियत के बराबर मिले थे
और तुम इश्क़ के ज़मींदार निकले

खैर! भुला दूँ गर मिलने के वसूलों को
हर दुआ में आमीन और भी है
हाँ माना तूँ है बेमिसाल हूर
पर सच है के हसीं और भी हैं

उफ़्फ़ फ़र्ज़ है, दर्द है, गर दर्द है तो मर्ज़ है
है तूँ जहाँ हूँ मैं वहाँ ये फ़र्ज़ ही अब तर्ज है
दीवाना बना फिर रहा एक दफ़ा तो कुबूल कर
एक आशिक़ की आशिक़ी का ये तुझपे कर्ज है

तेरी शख़्सियत ही नहीं साक़ी निगाहों में तेरी ठौर भी है
चलो हामियत ना सही पर मयकशी तो और भी है

ज़िंदगी ले जा रही एक दुराहे मोड़ से
तूँ एक राह पे मिले तो एक राह सुनी सही
है फ़क़त ज़ूनीनियत ये दो दिलों के जोड़ से
गर छलूँ मैं ख़ुद को ही हो दर्द वो दूनी सही

बचपना या है जवानी या उमर अब और भी है
तूँ ही तूँ है हर तरफ़ या ज़िंदगानी और भी है
हाँ कहूँगा फिर भी ये शब्द हों या दर्द हो

चलो छोड़ो मुहब्बत के नासूरों को
गमगीन और भी हैं
हाँ माना की तूँ भी है नाज़नी
पर सच है ये के हसीं और भी हैं

# ~* कुछ दर्द मेरा *~

कुछ दर्द मेरा है कुछ दर्द तेरे सबब का
कुछ है मुक़द्दर भी कुछ मेरे अदब का

क़ाफ़िले तकलीफों के चलने हैं तो चलेंगे
कुछ देर से ही सही हम फिर तो मिलेंगे
इम्तेहान ही तो है! उस पर इंतज़ार ग़ज़ब का
कुछ दर्द मेरा है कुछ दर्द तेरे सबब का

माना कुछ तल्ख़ियों से दूरियाँ मुकम्मल हैं
मगर खुदा के करम से ज़ीवन अजमल है
तालीफ़ कर तिनके मुस्कुराहटों के एक दफ़ा
एक तूँ, एक मैं, साथ से जीवन सबल है

हाँ माना की, फ़क़त! ये मसला है समझ का
कुछ दर्द मेरा है कुछ दर्द तेरे सबब का
कुछ है मुक़द्दर भी कुछ मेरे अदब का

काँच की तश्तरी आईना होती नहीं
सांस भी गर रोक लें गम कम तो होता नहीं

एक छलावा है मौत भी ज़िंदगी एक नूर है
बेवफ़ा तो गम भी है इल्म ये ज़रूर है

ख्याल ही रख लेना मजबूर मेरी कसक का
कुछ दर्द मेरा है कुछ दर्द तेरे सबब का
कुछ है मुक़द्दर भी कुछ मेरे अदब का

# ~* हम दूर सही *~

हम दूर सही मजबूर सही
ये साथ अभी भी बाक़ी है
तू है कहीं भी कैसी भी
हूँ बेचैन ज़रा सा तैशी भी
कहने सौ सौ बात अभी भी बाक़ी है
ये साथ अभी भी बाक़ी है

कोमल हाथों से जो प्यार दिखाया था तूने
इश्क़ में इस बेगानें को अज़ीज़ बनाया था तूने
हर दर्द का मर्ज़ महबूब ही था
इस रिश्ते का जोड़ वफ़ा ही था
आ फिर उन छम छम पैरों से
घबरा के पहली बार सही, जो प्रेम जताया था तूने

सुननी है वो फिर से तेरी अनबन
हूँ कहीं भी अब धरती या गगन
हाँ दिखा वही सुनेहरा रूप तेरा
जिसकी चाह भरे ये प्रेम तेरा

चल उठा वही हाँ मचा वही
हुड़दंग बने हर रंग सही

दरकिनार कर सारी तल्खियाँ
खिला दे वही फूलों की कनखियाँ
नेह से अपने फिर से सींचूँ मैं
खिलने को कलियाँ हज़ार अभी भी बाक़ी है
कहने सौ सौ बात अभी भी बाक़ी है
ये साथ अभी भी बाक़ी है

# जीवन से प्रेरित रचनाएँ

# ~* अधूरा फ़साना *~

कुछ रह गया अधूरा ग़र एक फ़साने से
एक धुन जो बाक़ी रह गयी अब आज़माने से

चलो माना कि कुछ टूट गया तेरे भीतर कहीं
तो क्या हुआ जो उसकी खनक है टिस रही
निकाल कोई और टुकड़ा तेरे आशियाने से
वो धुन उतनी ही तेरी है जो रह गयी आज़माने से

टूटे काँच के दर्पण में चेहरा निहारते तो नहीं
पैबंद की टाट से घर बुहारते तो नहीं
वो गुमान ही क्या जिसके आने में दर्द ना हो
संघर्ष के मोल तो जूतियों की कील से पूछो

पीर बिसर जाएगा बस यूँ ही गुनगुनाने से
एक ने किया अधूरा, मुकम्मल होगा दूजे फ़साने से

पत्थर को हो गुमान जड़ियल होने का
एक रस्सी भी अड़ जाए तो वो टूट जाता है

ख़्वाबों का हो जज़्बा आसमाँ भी बदलता है
चट्टान से टकरा के समंदर भी संभलता है

बना ले तान फिर एक और, दिल के मस्त तराने से
अधूरा भी होगा क़ामिल क्या डरना जमाने से

# ~* मंज़र है आदमी *~

हर ओर मज़मा है क्या खाक छान लेगा
देखो जिधर है चेहरा मंज़र है आदमी

लब्जों में कुछ सुना नज़रों से कुछ कहा
हर तर्ज़ पे नाचता बंदर है आदमी

राबता क्या उम्र से रक़ीब ख़ुद बना है
ढूंढता उल्फ़त को जिसे अंदर है आदमी

जल रहीं हैं हसरतें झुलस रहा जुनून है
दर्द ही का ज़र्फ है मछंदर है आदमी

दर्दे दरिया चस्पा है हिज़्रे के कोह में
अश्क़-ए-लहर क्या है समंदर है आदमी

हर हर्फ़ मतलबी है ज़हनों के आइने में
फिर वक्त क्या फ़रेबी सिकंदर है आदमी

गुज़रे हयात आहिस्ता दौलत की छोह में
मयस्सर नहीं है कौड़ी पंजर है आदमी

ज़ख़्म-ए-ज़रिया हुआ मयखाने की ओह में
आसमां है फ़र्श पर अंजर है आदमी

# ~* ख़ुदरंग ज़िंदगी *~

ज़िंदगी खुदरंग है कोई और रंग चढ़ता नहीं
मैं कुम्हार गढ़ता गया मेरा रूप सँचता नहीं

कुछ तो करम है तेरा भी मुक़द्दर देने वाले
जोड़े राही दिन ब दिन पर जीवन लम्हता नहीं

हर चाँद अपना सा लगे चाँदनी हर ओर है
तारे टिमटिमाते रहे ये आसमा सजता नहीं

धुंध सा बिखरा हुआ ज़िन्दगी की छाँव में
चमकते ओस सा यहाँ खैर कोई अपना नहीं

मुस्कुराता हुआ सोखा सिमट कर बैठ गया
दिल खुला सा आईना अक्स क्यूँ दिखता नहीं

खिलखिलाती आँखों का भी नूर अब कुछ और है
ज़िन्दगी एक धूप सी है मगर साया जलता नहीं

फ़िक्र क्या है इल्म क्या सब सपुर्द-ए-ख़ाक है
ज़श्न हो या ठोकरें कुछ यहाँ बचता नहीं

मखमली भी बेरहम भी ज़िंदगी एक हुस्न है
रूह-ए-ख़्वाबीदा भी नादाँ दिल समझता नहीं

ज़िंदगी खुदरंग है कोई और रंग चढ़ता नहीं
मैं कुम्हार गढ़ता गया मेरा रूप सँचता नहीं

# ~* फ़र्ज़ का आदमी *~

मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का
ना तर्ज़ का ना अर्ज़ का
ना हूँ किसी के कर्ज का
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

मुश्किलों ने कहा
संभाल लो संभाल लो
विचार हो कि सार हो
या मुश्क तुम उधार हो
अर्थ हो निरर्थ हो
सचल कोई मंझधार हो
ना इलाज किसी मर्ज़ का
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

पत्थरों को क्या मिला
वो रोकता मैं तोड़ता
"ज़िंदगी की धूप छाँव"
मैं छोड़ता मैं जोड़ता

मैं कल्प हूँ विकल्प हूँ
सानिध्य हूँ संकल्प हूँ
नहीं किसी के दर्ज का
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

भूख हूँ मैं प्यास हूँ
समर्थकों की आस हूँ
जूतियों के कील पूछें
मेरे दर्द की समर्थता
मै शूल हूँ त्रिशूल हूँ
शौर्य का मैं मूल हूँ
परख मुझे क्या तर्ज का
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

नज़र नहीं जिकर नहीं
किसी तंज की फ़िकर नहीं
उमर है क्या सबर है क्या
रुआब क्या रसूख़ क्या
क्या वास्ता जहान से
इस सुरमयी बिहान से
बस हो लिया हूँ अर्श का
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

जो निभ गयी निभा लिया
जो सह लिया छुपा लिया
कहूं किसे सुनूँ किसे
खुद को ही बता लिया
हूँ अकेला गर कहीं
तो भला है हर्ज क्या
मैं आदमी हूँ फ़र्ज़ का

# ~* यारों की महफ़िल *~

निश्छल निर्मम बातें हैं
हो संग सभी मुस्काते हैं
एक दूजे की खींच टांग
मन ही मन इतराते हैं
मिल के खिल जाए दिल
क्या खूब है यारों की महफ़िल

ऊटपटांग मचायें हुड़दंग
सब एक साथ सब एक रंग
कितना भी हो मन मसोस
खुली किताब हैं गुट में संग
सारे मूर्ख या हैं काबिल
क्या खूब है यारों की महफ़िल

अपना निज बतलाते हैं
हर दर्द में साथ निभाते हैं
कोई कुछ भी करे गलत
एक दूजे को समझाते हैं

सब ऊंच नीच में हैं शामिल
क्या खूब है यारों की महफ़िल

चिकना चुपड़ा ज्ञान नहीं
ना रोष कहीं ना होश कहीं
फर्श से अर्श बिठाने को
टोली का एक एक मीत सही
ना सोचें खोल के रख दें दिल
क्या खूब है यारों की महफ़िल

# ~* सवाल बाक़ी है *~

हर शख़्स एक मयान है साधे एक संधान है
अस्तित्व छड़ों में काटता अभी मसान बाक़ी है

क्या इश्क़ है क्या प्यार है रिश्तों में विचार है
परत परत उधड़ने को सारा समान बाक़ी है

नरम कहीं गरम कहीं एकान्तता में सुर्ख है
मूर्ख है क्या व्यक्ति भी सृष्टि विधान बाक़ी है

क्यूँ जल रहा गर विफल रहा बेगानी निगाह में
है आभास तो कर प्रयास अभी सम्मान बाक़ी है

क्षणिक सुख उछल रहा घड़ी घड़ी बदल रहा
धर धीर सुन ऐ आदमी तेरा मक़ाम बाक़ी है

है क्यूँ डरा अंधेरों से काले कौवों के घेरों से
तमस छँटने दे ज़रा उजियारा बिहान बाक़ी है

क्या धरा है बातों में जब शब्द ही निशब्द हैं
सोच में उलझने को ख़रा सुझान बाक़ी है

छुपा हुआ तूँ गोश में कपाट ही विराट हैं
उठा नज़र तो देख ले सारा मकान बाक़ी है

ना लड़खड़ा ना तिलमिला बन तंभ हो खड़ा
साख रख दे ताख सब तेरी उछाल बाक़ी है

मत सोच बहुत हुआ जो हुआ वो कुछ नहीं
दिन रैन यूँ ही कट रहे उम्र-ए-जंजाल बाक़ी है

प्रारब्ध तूँ आरंभ कर उत्तरों में क्या रखा
टोक के तूँ अक्स पूछ अभी सवाल बाक़ी है

# ~* सेवानिवृत्त पिता *~

पहर दर पहर गये दिन ये गुज़र
अरसे पहले शुरू जो किया था सफ़र
बच्चों की पेन्सिल, सुबह का अख़बार
चाय के ताँते, बाहर लोगों का दरबार
मिला वक़्त तो बच्चे और पौधों पे नज़र
पहर दर पहर गये दिन वो गुज़र

सुबह जाना वो ऑफिस बसता उठाये
कड़ी धूप में गमछे की पगड़ी लगाये
घर आ के चाय की चुस्की लगाना
छुटकी को प्यार से गोदी उठाना
सुबह अख़बार में पलटना खबर
पहर दर पहर गये दिन वो गुज़र

मोटरसाइकिल से मोटर पे हॉर्न बजाना
देर हो रही सुनती हो! जल्दी से आना
पानी, बसता, सर्दी का जैकेट
शाम को आते लाना मूँगफली का पैकेट

सुबह शाम सुबह शाम होते बसर
पहर दर पहर गये दिन वो गुज़र

काली मुँछे हुई अब सफ़ेद
हुए पापा से दादा गुज़रा समय बहुत तेज़
अब समय ही समय है ख़ुद के लिए
करना है जो ना किया ख़ुशी के लिये
जी हुजूरी के दिन गये वो पसर
पहर दर पहर गये दिन वो गुज़र